मुक्ति बोध परिसर

जिले में पले बढ़े राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त साहित्यकार स्व. सर्व श्री गजानन माधव मुक्ति बोध, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी एवं बल्देव प्रसाद मिश्र के होने के पश्चात् भी साहित्य के क्षेत्र में अभी तक यह क्षेत्र पूर्णतः उपेक्षित था। दिग्विजय महाविद्यालय के समीप स्थित प्रसिद्ध भूलन बाग को ‘‘**त्रिवेणी परिसर**’’ के रूप में विकसित किया गया, जिसकी वर्तमान में सौन्दर्य देखते ही बनती हैं। इतना रमणीक स्थान प्रदेश में तो क्या राज्य के गिनती के शहरों में होंगे, जहां दो दो तालाब से घिरा हुआ भू–खण्ड पृष्ठ भाग एतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाने वाला **मुक्ति बोध परिसर** स्थापित किया गया है।

भवन का जीर्णोद्धार के पश्चात का भव्य दृश्य, जिसे मुक्तिबोध स्मारक परिसर के रूप में शासन द्वारा विकसित किया गया।

मुक्ति बोध स्मारक का निर्माण कर छ.ग. की साहित्यक धरोहर, विशेष कर मुक्तिबोध, डॉ पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी तथा डॉ. बल्देवप्रसाद

मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के महत्व को रेखांकित करने की पहल अब साकार हो रही है।

मूर्धन्य कवि – समीक्षक गजानन माधव मुक्तिबोध जी ने अपने जीवन काल की सर्वश्रेष्ठ रचनाएं दिग्विजय कालेज में अपने सेवा काल (1958–1964) के दौरान लिखी उनके इस रचनाकाल और रचनाओं पर देश की शीर्ष अकादमिक व साहित्यिक बिरादरी में निरंतर चर्चा होती रही है। इसी प्रकार स्व. बख्शी जी इस महाविद्यालय में प्राध्यापक रहे और अपनी लेखनी से माँ भारती की अनन्य सेवा की डॉ. मिश्र जी तुलसी दर्शन के प्रखर सर्जक के रूप में मानस अध्येताओं के आदर्श बन गये। जन्म और कर्म से राजनांदगांव व छत्तीसगढ़ को गौरवांवित करने वाले इन साहित्य मनीषियों की ज्ञान राशि के संचित कोष से नयी पीढ़ी को परिचित कराने की दृष्टि से स्मारक को लोग बड़ी आशा से निहार रहे हैं।

राजनांदगांव जिले की मुख्य मार्गो में जिले साहित्यकारों के संबंध में लगाये गये बोर्ड की एक झलक ।

त्रिवेणी संग्रहालय

त्रिवेणी संग्रहालय के उपरी मंजिल पर तीन खंड है। उसका उत्तरी खंड जहां मुक्तिबोध जी रहा करते थे। उनकी साहित्य साधना का स्थान और घुमावदार सीढ़ी जिसका उल्लेख उन्होनें अपनी रचनाओं में की है इसी उत्तरी खंड में है । इस खंड में पुनश्च मुक्तिबोध जी को उनकी यादों के साथ समर्पित करना निश्चय ही उनके प्रति कृतज्ञता एवं श्रृद्धा का प्रतीक है। इस स्मारक के मध्य खंड को साहित्यकार डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी तथा दक्षिणी खंड को मानस मर्मज्ञ डॉ. बल्देव प्रसाद मिश्र की स्मृतियों उनके पत्रों, रचनाओं एवं पाण्डुलिपियों के प्रदर्शन हेतु समर्पित कर इस स्मारक को तीन मूर्धन्य साहित्यकारों का संगम "**त्रिवेणी**" बना दिया गया है । इस स्मारक के **भूतल में स्वागत कक्ष, प्रतीक्षा कक्ष एवं वाचनालय** की व्यवस्था की गई है ।

मुक्तिबोध जी को समर्पित कक्ष को देखकर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वह आज भी अपनी रचनाओं के सृजन में लीन हो। मुक्तिबोध जी का सिगरेट बाक्स, उनकी पोशाक, चश्मा और उनकी वह दो कलमें (पेन) जिससे उन्होंने अपनी अनेक रचनाएं लिखी थी, को वहां देखकर यह आभास होता है जैसे वह कहीं हमारे आसपास मौजूद हो । स्मारक के मध्यकक्ष में डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी के अनेक दुर्लभ छायाचित्र, पाण्डुलिपियों, उनके ग्रंथों आदि को सजाकर रखा गया है। उनकी आईल पेटिंग का अवलोकन सहज ही उनकी स्मृति को जीवंत बनाता है। स्मारक के दक्षिण कक्ष में डॉ. बल्देव प्रसाद मिश्र जी का तैल चित्र के साथ, उनके जीवन से जुड़ी अनेक यादो को संजोया गया है।

कुल मिलाकर राजनांदगांव में स्थापित मुक्तिबोध स्मारक–त्रिवेणी संग्रहालय अपने आप में अनूठा है। छत्तीसगढ़ राज्य ही नही अपितु राश्ट्रीय स्तर पर साहित्यकारों की स्मृति को समर्पित यह एक ऐसा स्मारक है जिसका कहीं अन्यत्र उदाहरण नही मिलता। साहित्य प्रेमियों एवं इन शोधकर्त्ताओं के लिए यह एक अमूल्य धरोहर है।

यह स्मारक सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक दर्शकों, साहित्य प्रेमियों के लिए खुला रहता है । शासकीय अवकाश रविवार के दिन भी यहां जाया जा सकता है। जिला प्रषासन ने यह व्यवस्था रविवार के अवकाश का लाभ उठाकर ज्यादा से ज्यादा लोग इस ऐतिहासिक इमारत एवं साहित्य मनीशियों की रचनाओं तथा उनसे जुड़ी सामाग्रियों का अवलोकन कर सके, इस उद्देश्य से की है। यह स्मारक सोमवार को बंद रहता है।

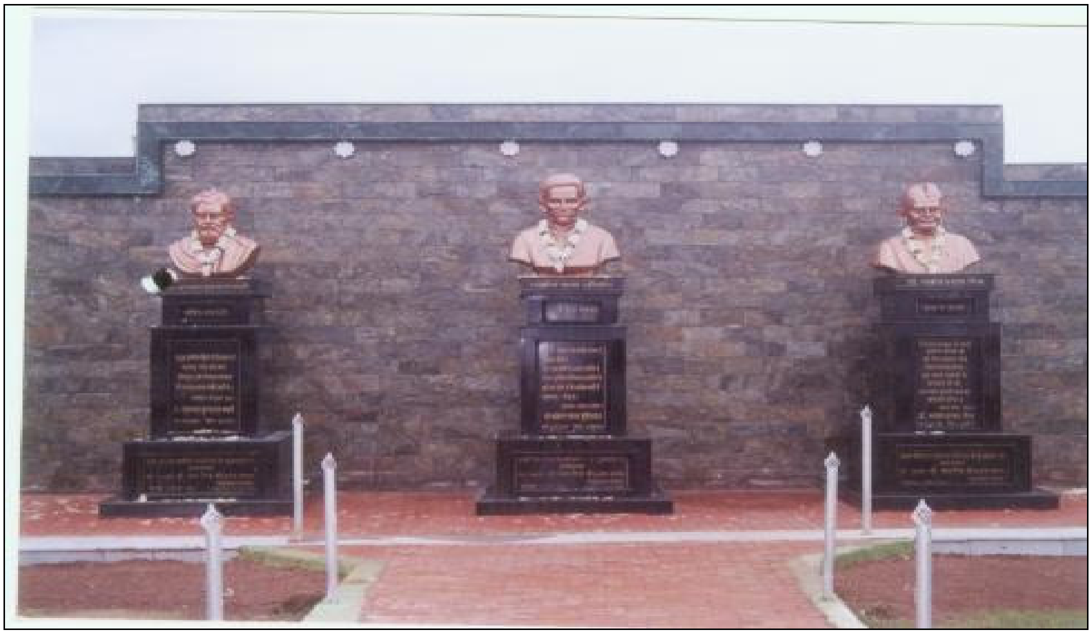

मुक्तिबोध स्मारक परिसर प्रांगण में स्थापित राजनांदगांव जिले की तीन साहित्यकारों पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, गजानन माधव मुक्तिबोध एवं बल्देव प्रसाद मिश्र की आवक्ष प्रतिमाए।

******